06-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

# "मीठे बच्चे - जब तुम सम्पूर्ण पावन बनोगे तब ही बाप तुम्हारी बलिहारी स्वीकार करेंगे, अपनी दिल से पूछो हम कितना पावन बने हैं!"

पुण्य आत्मा कहा तक बने?

*Having snatched this veil from thorns, and breaking (all) bonds, I tied (myself) ankle-bells.*
*Don't anybody stop the flight of my fancy! (Lo), there goes my heart.*
*Today again I want to live it up; Today again I desire to die!*

*काँटों से खींचके ये आँचल,*
*तोड़के बँधन बाँधी पायल, कोई ना रोको दिल की उड़ान को दिल वो चला,आ आ आ आ आ आ*
*आज फिर जीने की तमन्ना है;*
*आज फिर मरने का इरादा है!*

## प्रश्नः- तुम बच्चे अभी खुशी-खुशी से बाप पर बलि चढ़ते हो - क्यों?

**उत्तरः**- क्योंकि तुम जानते हो, अभी हम बलिहार जाते हैं तो बाप 21 जन्मों के लिए बलिहार जाते हैं। तुम बच्चों को यह भी मालूम है कि अब इस अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ में सब मनुष्य-मात्र को स्वाहा होना ही है इसलिए तुम पहले ही खुशी-खुशी से अपना तन-मन-धन सब कुछ स्वाहा कर सफल कर लेते हो।

बाप को दे दो

## गीत:-मुखड़ा देख ले प्राणी... Click

मुखड़ा
देख ले(2)

मुखड़ा देख ले प्राणी,
जरा दर्पण में होSS,
देख ले कितना,
पुण्य है कितना,
पाप तेरे जीवन में,
देख ले दर्पण में,
मुखडा देख ले प्राणी,
जरा दर्पण में ॥

कभी तो पल भर सोच ले प्राणी,
क्या है तेरी करम कहानी ।
कभी तो पल भर सोच ले प्राणी,
क्या है तेरी करम कहानी ।

पता लगा ले,
पता लगा ले पड़े हैं कितने,
दाग तेरे दामन में
देख ले दर्पण में,
मुखडा देख ले प्राणी,
जरा दर्पण में ॥

खुद को धोखा दे मत बन्दे,
अच्छे ना होते कपट के धंधे ।
खुद को धोखा दे मत बन्दे,
अच्छे ना होते कपट के धंधे ।

सदा न चलता,
सदा न चलता किसी का नाटक,
दुनिया के आँगन में,
देख ले दर्पण में,
मुखडा देख ले प्राणी,
जरा दर्पण में ॥

मुखड़ा देख ले प्राणी,
जरा दर्पण में हो,
देख ले कितना,
पुण्य है कितना,
पाप तेरे जीवन में,
देख ले दर्पण में,
मुखडा देख ले।

चढ़ाओ नशा...

अगर यह पढ़ कर अपने रोंगटे ना खड़े हो
तो अपनी चेकिंग बहुत गहराई से करनी चाहिए
कहीं तो कुछ नहीं किन्तु बहुत सारी खामियां/कमियां है..
जिसको जल्द से जल्द भरना होगा
यही समय की पुकार है

06-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अखिल कोटि ब्रह्मांड नायक

ओम् शान्ति। शिव भगवानुवाच। जरूर अपने बच्चों प्रति ही (only) नॉलेज सिखाते हैं वा श्रीमत देते हैं - (How lucky and Great we are...!) हे बच्चों वा हे प्राणी, शरीर से प्राण निकल जाते हैं वा आत्मा निकल जाती है, एक ही बात है। हे प्राणी अथवा हे बच्चे, तुमने देखा कि मेरे जीवन में कितना पाप था और कितना पुण्य था! हिसाब तो बता दिया है - तुम्हारे जीवन में आधाकल्प पुण्य, आधाकल्प पाप होते हैं। पुण्य का वर्सा बाप से मिलता है, जिसको राम कहते हैं। राम, निराकार को कहा जाता है, न कि सीता वाला राम। तो अब तुम बच्चे जो आकर के ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बने हो, तुम्हारी बुद्धि में आया है (स्व-दर्शन) बरोबर आधाकल्प हम पुण्य-आत्मा ही थे फिर आधाकल्प पाप-आत्मा बने। अभी पुण्य-आत्मा बनना है। कितना पुण्य-आत्मा बने हैं, वह हर एक अपनी दिल से पूछे। पाप-आत्मा से पुण्य-आत्मा कैसे बनेंगे.... वह भी बाप ने समझाया है। यज्ञ, तप आदि से तुम पुण्य-आत्मा नहीं बनेंगे (ये पक्का समझ लो..), वह है भक्ति मार्ग, इससे कोई भी मनुष्य पुण्य-आत्मा नहीं बनते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो, हम पुण्य-आत्मा


























भक्ति मार्ग

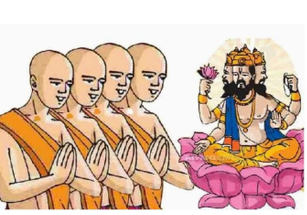

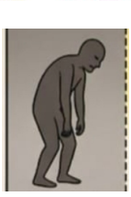

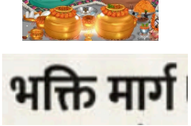

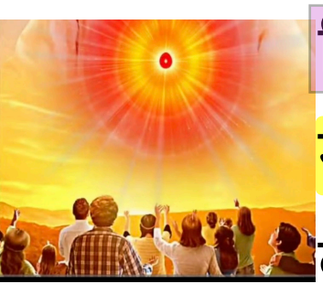

बन रहे हैं। आसुरी मत से पाप-आत्मा बनते-बनते सीढ़ी उतरते ही आये हैं। कितना समय हम पुण्य-आत्मा बनते हैं वा सुख का वर्सा लेते हैं - यह किसको पता नहीं है। उस बाप को याद तो सभी मनुष्य करते हैं, उनको ही परमपिता परमात्मा कहते हैं। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को परमात्मा नहीं कहेंगे और किसको परमात्मा नहीं कह सकते हैं। भल इस समय तुम प्रजापिता ब्रह्मा कहते हो परन्तु प्रजापिता को कभी भक्तिमार्ग में याद नहीं करते हैं। याद सभी फिर भी निराकार बाप को ही करते हैं - "ओ गॉड फादर, ओ भगवान" अक्षर ही निकलते हैं। एक को ही याद करते हैं। मनुष्य अपने को गॉड फादर कह न सकें। ना ही ब्रह्मा-विष्णु-शंकर अपने को गॉड फादर कह सकते हैं। उनके शरीर का नाम तो है ना। एक ही गॉड फादर है, उनको अपना शरीर नहीं है। भक्ति मार्ग में भी शिव की बहुत पूजा करते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो - शिवबाबा इस शरीर द्वारा हमसे बात करते हैं - हे बच्चों, कितना प्यार से कहते हैं समझते हैं, मैं सर्व का पतित-पावन, सद्गति दाता हूँ। मनुष्य बाप की

Exclusive Authority of Shiv baba

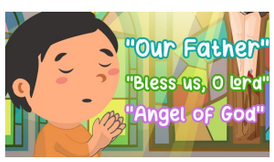

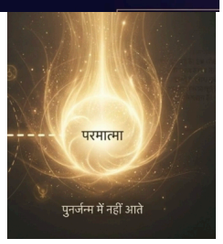

महिमा करते हैं ना लेकिन उनको यह पता नहीं है कि 5 हजार वर्ष बाद आते हैं। जरूर जब कलियुग का अन्त होगा तब ही तो आयेंगे। अभी कलियुग का अन्त है तो जरूर अब आया हुआ है। तुमको श्रीमत मिलती है, श्रीमत कोई श्रीकृष्ण की नहीं है। श्रीकृष्ण की आत्मा भी श्रीमत से सो देवता बनी थी फिर 84 जन्म लेते अब तुम आसुरी मत के बने हो। बाप कहते हैं - मैं आता ही तब हूँ जब तुम्हारा चक्र पूरा होता है। तुम जो शुरू में आये थे, अब जड़जड़ीभूत अवस्था में हो। झाड़ पुराना जड़जड़ीभूत होता है तो सारा झाड़ ऐसा हो जाता है। बाप समझाते हैं - तुम्हारे तमोप्रधान बनने से सब तमोप्रधान बन गये हैं। यह मनुष्य सृष्टि का, वैरायटी धर्मों का झाड़ है, इसको उल्टा झाड़ कहते हैं, इसका बीज ऊपर में है। उस बीज से ही सारा झाड़ निकलता है। मनुष्य कहते भी हैं "गॉड फादर"। आत्मा कहती है, आत्मा का नाम आत्मा ही है। आत्मा शरीर में आती है तो शरीर का नाम रखा जाता है, खेल चलता है। आत्माओं की दुनिया में खेल नहीं चलता। खेल की जगह ही यह

चढ़ाओ नशा...

m.m.m....imp. feel the Responsibility

**Point of the Day**

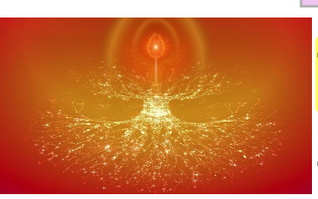

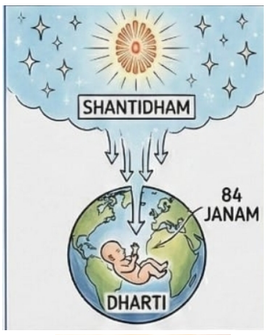

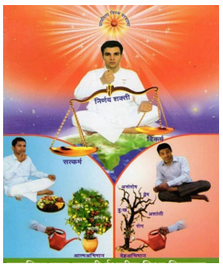

है। नाटक में रोशनी आदि सब होती है। बाकी जहाँ आत्मायें रहती हैं, वहाँ सूर्य चांद नहीं हैं, ड्रामा का खेल नहीं चलता है। रात-दिन यहाँ होते हैं। सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में रात-दिन नहीं होते, कर्मक्षेत्र यह है। इसमें मनुष्य अच्छे कर्म भी करते हैं, बुरे कर्म भी करते हैं। सतयुग-त्रेता में अच्छे कर्म होते हैं क्योंकि वहाँ 5 विकार रूपी रावण का राज्य ही नहीं। बाप बैठ कर्म, अकर्म, विकर्म का राज़ बताते हैं। कर्म तो करना ही है, यह कर्मक्षेत्र है। सतयुग में जो मनुष्य कर्म करते हैं वह अकर्म हो जाता है। वहाँ रावणराज्य ही नहीं, उनको हेविन कहा जाता है। इस समय हेविन है नहीं। सतयुग में एक ही भारत था और कोई खण्ड नहीं था। हेविनली गॉड फादर कहते हैं तो बाप जरूर हेविन ही रचेंगे। यह सब नेशन वाले जानते हैं कि भारत प्राचीन देश है। पहले-पहले सिर्फ भारत ही था, यह कोई नहीं जानते हैं। अभी तो नहीं है ना। यह है ही 5 हजार वर्ष की बात। कहते भी हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत हेविन था। रचयिता जरूर रचना रचेंगे। तमोप्रधान बुद्धि होने कारण इतना

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

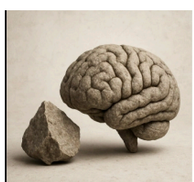
तमो प्रधान

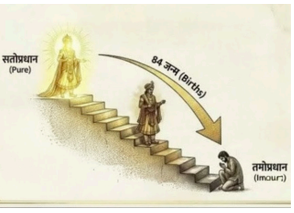

भी नहीं समझते। भारत तो सबसे ऊंच खण्ड है। पहली बिरादरी है, मनुष्य सृष्टि की। यह भी ड्रामा बना हुआ है। साहूकार गरीबों को मदद करते हैं, यह भी चला आता है। भक्ति मार्ग में भी साहूकार गरीबों को दान करते हैं। परन्तु यह है ही पतित दुनिया। तो जो, जो कुछ भी दान पुण्य करते हैं, पतित ही करते हैं, जिसको दान करते हैं वह भी पतित हैं। पतित, पतित को दान करेंगे, उनका फल क्या पायेंगे। भल कितना भी दान-पुण्य करते आये हैं, फिर भी गिरते आये हैं। भारत जैसा दानी खण्ड और कोई नहीं होता। इस समय तुम्हारा जो भी तन, मन, धन है, सब इसमें स्वाहा करते हो, इनको कहा जाता है राजस्व अश्वमेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ। आत्मा कहती है - यह जो पुराना शरीर है, इनको भी यहाँ स्वाहा करना है क्योंकि तुम जानते हो - सारी दुनिया के मनुष्य-मात्र इसमें स्वाहा होते हैं, इसलिए हम क्यों नहीं खुशी से बाबा पर बलि चढ़ जायें। आत्मा जानती है - हम बाप को याद करते हैं। कहते भी आये हैं, बाबा आप जब आयेंगे तो हम बलिहार जायेंगे क्योंकि अब हमारे बलिहार

जाने से आप फिर 21 जन्म के लिए बलिहार जायेंगे। यह सौदागरी है। हम आप पर बलिहार जाते हैं तो आप भी तो 21 बार बलिहार जाते हैं। बाप कहते हैं - जब तक तुम्हारी आत्मा पवित्र नहीं बनी है तब तक हम बलिहारी स्वीकार नहीं करते हैं।

ये पक्का समझ लो..

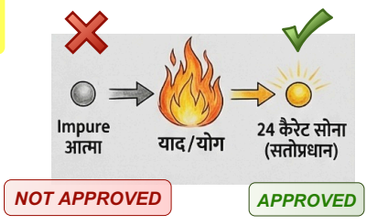

मामेकम/ *Only Me*

बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो आत्मा प्योर बन जायेगी। बाप को भूलने से तुम कितने पतित दु:खी हुए हो। मनुष्य दु:खी होते हैं तो फिर शरणागति लेते हैं। अभी तुम 63 जन्म रावण से बहुत दु:खी हुए हो। एक सीता की बात नहीं, सब सीतायें हैं, जो भी मनुष्य मात्र हैं। रामायण में तो कहानी लिख दी है। सीता को रावण ने शोक वाटिका में डाला। वास्तव में बात सारी इस समय की है। सभी रावण अर्थात् 5 विकारों की जेल में हैं इसलिए दु:खी हो पुकारते हैं - हमको इनसे छुड़ाओ। एक की बात नहीं। बाप समझाते हैं सारी

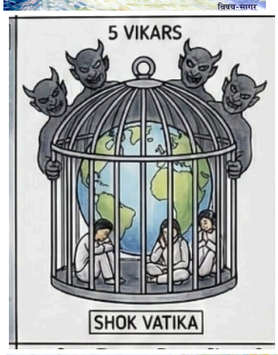

दुनिया रावण की जेल में है। रावण राज्य है ना। कहते भी हैं - रामराज्य चाहिए। गांधी ने भी कहा, संन्यासी कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि रामराज्य चाहिए। भारतवासी ही कहेंगे। इस समय आदि सनातन देवी-देवता धर्म है नहीं और ब्रान्चेज हैं, सतयुग था। एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। अभी वह नाम ही बदला हुआ है। अपने धर्म को भूल फिर और-और धर्म में कनवर्ट होते जाते हैं। मुसलमान आये कितने हिन्दुओं को अपने धर्म में कनवर्ट कर लिया। क्रिश्चियन धर्म में भी बहुत कनवर्ट हुए हैं इसलिए भारतवासियों की जनसंख्या कम हो गई है। नहीं तो भारतवासियों की जनसंख्या सबसे जास्ती होनी चाहिए। अनेक धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। बाप कहते हैं - तुम्हारा जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, वह सबसे ऊंच है। सतोप्रधान थे, अब वही बदलकर फिर तमोप्रधान बने हैं। अब तुम बच्चे समझते हो - ज्ञान सागर, पतित-पावन जिसको बुलाते हैं, वही सम्मुख पढ़ा रहे हैं। वह ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। क्राइस्ट की ऐसी महिमा नहीं करेंगे।

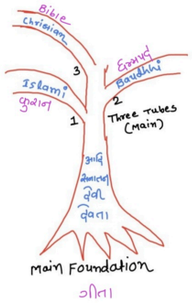

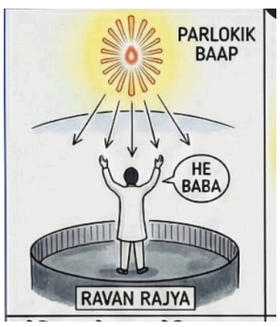


कापारी खुशी

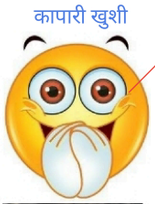

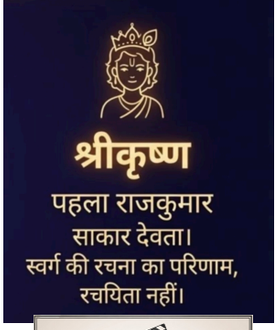


06-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

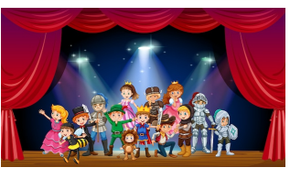

श्रीकृष्ण को ज्ञान का सागर, पतित-पावन नहीं कहा जाता है। सागर एक होता है। चारों तरफ आलराउन्ड सागर ही सागर है। दो सागर नहीं होते हैं। यह मनुष्य सृष्टि का नाटक है, इसमें सबका अलग-अलग पार्ट है। बाप कहते हैं मेरा कर्तव्य सबसे अलग है, मैं ज्ञान का सागर हूँ। मुझे ही तुम पुकारते हो हे पतित-पावन, फिर कहते हो लिबरेटर। लिबरेट किससे करते हैं? यह भी कोई नहीं जानते। तुम जानते हो, हम सतयुग-त्रेता में बहुत सुखी थे, उसको स्वर्ग कहा जाता है। अभी तो है ही नर्क इसलिए पुकारते हैं - दु:ख से लिबरेट कर सुखधाम ले चलो। संन्यासी कभी नहीं कहेंगे कि फलाना स्वर्गवासी हुआ, वह फिर कहते हैं पार निर्वाण गया। विलायत में भी कहते हैं लेफ्ट फॉर हेविनली अबोड। समझते हैं, गॉड फादर पास गये। हेविनली गॉड फादर कहते हैं, बरोबर हेविन था। अब नहीं है। हेल के बाद हेविन चाहिए। गॉड फादर को यहाँ आकर हेविन स्थापन करना है। सूक्ष्मवतन, मूलवतन में कोई हेविन नहीं होता है। जरूर बाप को ही आना पड़ता है।

चढ़ाओ नशा...

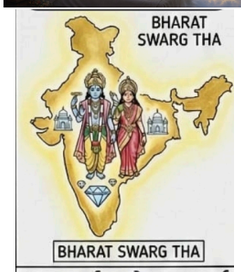

06-05-2026 प्रात:मुरली "बापद

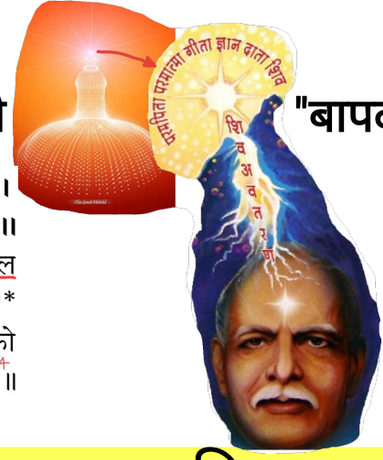

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

बाप कहते हैं - मैं आकर प्रकृति का आधार लेता हूँ, मेरा जन्म मनुष्यों मुआफिक नहीं है। मैं गर्भ में नहीं आता हूँ, तुम सभी गर्भ में आते हो। सतयुग में गर्भ महल होता है क्योंकि वहाँ कोई विकर्म होता नहीं जो सजा भोगें इसलिए उसको गर्भ महल कहा जाता है। यहाँ विकर्म करते, जिसकी सजा भोगनी पड़ती है, इसलिये गर्भ जेल कहा जाता है। यहाँ रावण राज्य में मनुष्य पाप करते रहते हैं। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया - स्वर्ग, इसलिए कहते हैं पीपल के पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। यह श्रीकृष्ण की महिमा दिखाते हैं। सतयुग में गर्भ में दु:ख नहीं होता है। बाप कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाते हैं जिसका फिर शास्त्र गीता बनाया है। परन्तु उसमें शिव भगवानु-वाच के बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। अब तुम जानते हो, हम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा लेते हैं। अभी भारत




Point to ponder deeply...

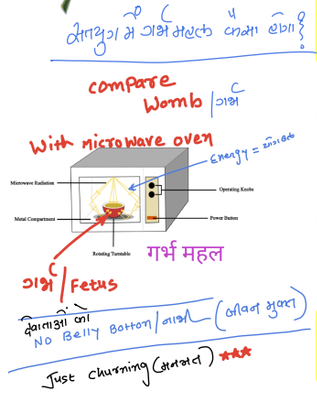

रावण से श्रापित है इसलिए दुर्गति हो गई है। यह बड़ा श्राप भी ड्रामा में नूँधा हुआ है। बाप आकर वर देते हैं - आयुश्वान भव, पुत्रवान भव, सम्पत्तिवान भव..... सभी सुख का वर्सा देते हैं।

तुमको आकर पढ़ाते हैं, जिस पढ़ाई से तुम देवता बनते हो। यह नई रचना हो रही है। ब्रह्मा द्वारा तुमको बाप अपना बनाते हैं। गाया भी जाता है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम उनके बच्चे ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ बने हो। दादे से वर्सा बाप द्वारा लेते हो।

आगे भी लिया था। अब फिर बाप आया है। बाप के बच्चे तो फिर बाप के पास जाने चाहिए। परन्तु गाया हुआ है, प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि की स्थापना होती है। तो यहाँ होगी ना। आत्मा के सम्बन्ध में कहेंगे हम भाई-भाई हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान बनने से तुम भाई-बहिन बनते हो। इस समय तुम सब भाई-बहिन हो, तुमने बाप से वर्सा लिया था। अब भी बाप से वर्सा ले रहे हो।

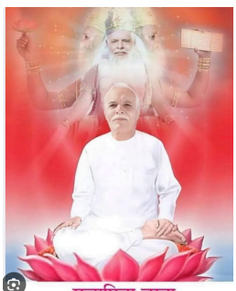

शिवबाबा कहते हैं - मुझे याद करो। तुम आत्मा को शिवबाबा को याद करना है। याद करने से ही तुम पावन बनेंगे और कोई उपाय नहीं है। पावन

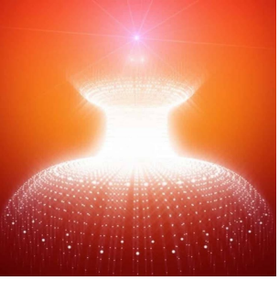

ये पक्का समझ लो..

06-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बनने सिवाए तुम मुक्तिधाम में जा भी नहीं सकते हो। जीवनमुक्तिधाम में पहले-पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म था फिर नम्बरवार और-और धर्म आये। बाप अन्त में आकर सबको दु:खों से मुक्त करते हैं। उनको कहा भी जाता है लिबरेटर। बाप कहते हैं - तुम सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे। बुलाते भी हो बाबा आओ - हमको पतित से पावन बनाओ। टीचर तो पढ़ाते हैं, इसमें चरित्र करते हैं क्या? यह भी पढ़ाई है। बाप ज्ञान का सागर ही आकर ज्ञान देते हैं। अच्छा।

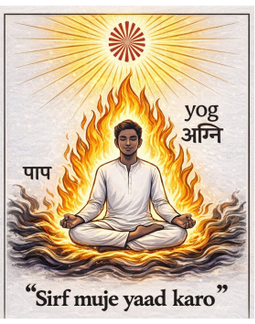

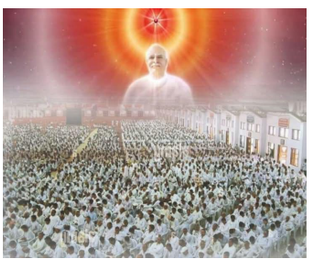

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों का नमस्ते।

06-05-2026 प्रात:मुरली ओम्

## धारणा के लिए मुख्य सार:

1) कर्म, अकर्म और विकर्म की गति को जान अब कोई विकर्म नहीं करना है। कर्मक्षेत्र पर कर्म करते हुए विकारों का त्याग करना ही विकर्म से बचना है।

2) ऐसा पावन बनना है जो हमारी बलिहारी बाप स्वीकार कर ले। पावन बनकर पावन दुनिया में जाना है। तन-मन-धन इस यज्ञ में स्वाहा कर सफल करना है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

06-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

# वरदान: नॉलेज की लाइट माइट द्वारा विघ्न-विनाशाक बनने वाले मास्टर नॉलेजफुल भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

भक्ति मार्ग में गणेश को विघ्न-विनाशक कहकर पूजते हैं, साथ-साथ उन्हें मास्टर नॉलेजफुल अर्थात् विद्यापति भी मानते हैं।

तो जो बच्चे मास्टर नॉलेजफुल बनते हैं वे कभी विघ्नों से हार नहीं खा सकते क्योंकि नॉलेज को लाइट-माइट कहा जाता है, जिससे मंजिल पर पहुंचना सहज हो जाता है।

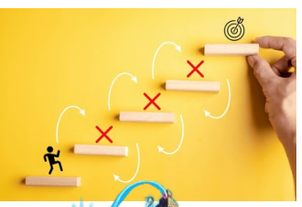

ऐसे जो विघ्न-विनाशक हैं, बाप के साथ सदा कम्बाइण्ड रहते हुए नॉलेज का सिमरण करते रहते हैं वे कभी विघ्न हार नहीं बन सकते।

**स्लोगन**:-अन्दर बाहर जो भी बुराईयां हैं उन्हें सम्पूर्ण विल कर दो तो विल-पावर आ जायेगी।

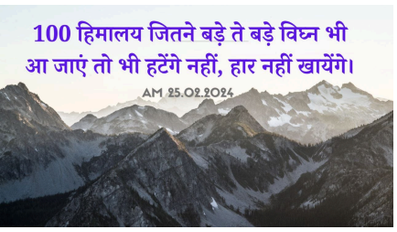


# ये अव्यक्त इशारे -

## सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

अभी अनुभवी बन औरों को भी अचल अडोल बनाने का, अनुभव कराने का समय है।

*Call of time/समय की पुकार*

समझा?

अभी खेल करने का समय समाप्त हुआ। अब सदा समर्थ बन निर्बल आत्माओं को समर्थ बनाते चलो।

*Mind very well...*

*Point to be Noted*

आप लोगों में निर्बलता के संस्कार होंगे तो दूसरों को भी निर्बल बना देंगे।

ज्ञान की हर प्वाइंट का अनुभवी बनने के लिए एकान्तप्रिय बनो, एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाओ।

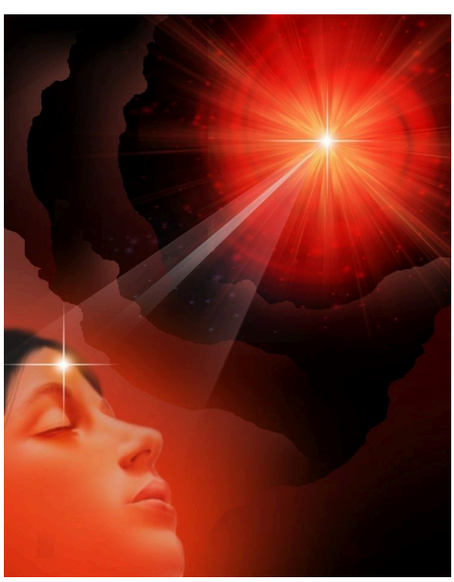

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

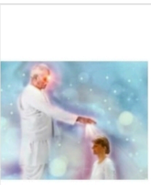

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

29-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**वरदान:- मनन द्वारा बाप की प्रापर्टी को अपनी प्रापर्टी बनाने वाले दिव्य बुद्धिवान भव**

Finale Achievement

बाप द्वारा जो भी खजाना मिलता है, उसे मनन करो तो अन्दर समाता जायेगा।

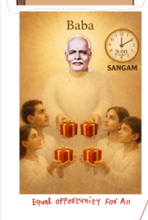


प्रापर्टी तो सबको एक जैसी मिली हुई है लेकिन जो मनन करके उसे अपना बनाते हैं, उन्हें उसका नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है - अपनी घोट तो नशा चढ़े। m.m.m....imp.

Here is the difference

Advantages

जो मनन की मस्ती में सदा मस्त रहते हैं उन्हें दुनिया की कोई भी चीज़, उलझन आकर्षित नहीं कर सकती। उन्हें दिव्य बुद्धि का वरदान स्वत: मिल जाता है।

इस वरदान के संदर्भ में....

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए की स्व-अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वाध्याय/Self Study से ही हम ज्ञान की गहराई में जा सकेंगे और आत्मा में जो विकार गहराई में घर कर चुके हैं उनको Analyze कर सकेंगे जिसके चलते उनको निकाल भी सकेंगे।

Team HLM ये विनम्रता से भार पूर्वक अरज करती है कि आप मुरली को पढ़कर सेल्फ स्टडी अवश्य कीजिये। (यह समय बीत गया तो फिर कभी वापिस नहीं आएगा क्योंकि यह चक्र कल्प कल्पान्तर हूबहू रिपीट होता है)

तभी आप मुरली को गहराई से समझ पाएंगे और मुरली को समझना अर्थात मीठे बाबा को समझना क्योंकि मुरली है शिवबाबा का मन...

बाबा कहते हैं कि तुम जितना मुझको जानते जाओगे उतना संपन्न बनते जाओगे और सब कुछ जान जाओगे।

अपनी घोट तो नशा चढ़े...

बाप दादा के अनमोल मधुर महावाक्य मनन शक्ति पर

Click

हैं - मेरे को याद करने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। अच्छा।

01/04/2026

Note it down